

जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 01.10.2020

**कोरोना वायरस को रोकने के लिए नेज़ल स्प्रे के विकास में जुटी टीम का जामिया के प्रोफेसर
समन्वय कर रहे हैं**

बायोमेडिकल इंजीनियरिंग में माहिर, जामिया मिल्लिया इस्लामिया के इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग विभाग के प्रोफेसर मुन्ना खान, एसयूआरआईजी (एक्रोनिम फार सार्स-कोविड-2 यूनिफाइड एंड रेज़िस्टिव गेट) के विकास के लिए वैज्ञानिक समन्वय कर रहे हैं। यह टीम, कोरोना वायरस को रोकने के लिए एक नेज़ल स्प्रे बनाने का प्रयास कर रही है।

प्रो खान के मुताबिक यह महत्वपूर्ण काम डायरेक्टर जनरल मेडिकल सर्विसेज (डीजीएमएस) (एअर) के तहत, आईआईटी दिल्ली, जामिया, एम्स, सेंटर फॉर सेल्युलर एंड मॉलिक्यूलर बायोलॉजी (हैदराबाद की सीएसआईआर प्रयोगशाला), सशस्त्र बल मेडिकल कॉलेज, पुणे, शिक्षा ओ अनुसन्धान विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर और आईआईटी खड़गपुर के शोधकर्ता कर रहे हैं। इनकी कोशिश कम लागत और उपयोगकर्ता के अनुकूल यूआरआईजी के विकास का लक्ष्य है। इनका प्रयास है कि अब से एक साल के अंदर इसे व्यापक इस्तेमाल के लिए वितरित किया जा सके।

एसयूआरआईजी इस सिद्धांत पर कार्य करेगा कि कई सामान्य यौगिक जैसे हनी, कैम्फर डेरिवेटिव, हाइड्रोजन सल्फाइड- ब्लैक सॉल्ट का एक घटक, यूकलिप्टस के तेल आदि शरीर के बाहर ही कोरोना वायरस को निष्क्रिय कर सकें।

मेडिकल साइंस में नाक से फेफड़े के ऐल्विअलस (छोटे हवा के थैले) तक का वायु स्थान, शरीर के बाहर का हिस्सा माना जाता है। वैज्ञानिक रिपोर्टों में कहा गया है कि कोरोना वायरस, किसी व्यक्ति द्वारा पहने गए सुरक्षात्मक मास्क को भेदते हुए शरीर के इसी वायु स्थान से प्रवेश करके वहां रहता है और इस समय तक वह वास्तव में रक्त और शरीर के टिशू में प्रवेश नहीं करता है।

एसयूआरआईजी नेज़ल स्प्रे के ज़रिए इसी पैसेज पर इंप्लांट (डिपाज़िट) किया जाएगा। यह डिपाज़िट वहां पर एक सुरक्षात्मक सतह बना देगा। इससे, फेस मास्क को भेद कर आने वाले

वायरस रक्त प्रवाह और टिशू में प्रवेश करने से पहले निष्क्रिय हो जाएंगे।

अहमद अज़ीम

जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक